7

यीशु की मृत्यु कैसे हुई?

स्वभाविक है कि यीशु की मृत्यु उसके विषय में बाइबल के संदेश का केन्द्र है। यह उसके अस्तित्व के सबसे मज़बूती से स्थापित ऐतिहासिक तथ्यों में से एक है। जैसा कि हम देख चुके हैं कि यहूदी अधिकारियों की ज़िद पर उसकी मृत्यु पुन्तियुस पिलातुस के हाथों क्रूस पर चढ़ाए जाने पर हुई। उसकी मृत्यु के बारे में हम और क्या जान सकते हैं? क्रूस पर चढ़ाए जाने का सही सही अर्थ क्या था? इन ऐतिहासिक प्रश्नों का उत्तर देने के प्रयास में हमें स्वयं बाइबल और बाइबल के बाहर के स्रातों से भी सहायता मिलती है।

भयानकता और पीड़ा

मेल गिबसन की 2004 में *द पैशन ऑफ़ द क्राइस्ट* में क्रूसारोहरण के द्वारा मृत्यु की क्रूरता और अमानवीयता को सजीवता से दिखाया गया। कुछ दर्शकों ने फिल्म में हिंसा दिखाए जाने की शिकायत की। कई सालों से क्रूसारोहण का अध्ययन करने वाले मेरे जैसे व्यक्ति का उत्तर था, ''आपको क्या उम्मीद थी?'' मुझे लगता है कि इसमें दिखाया गया है कि हमें सचमुच में यीशु की मृत्यु के ढंग की कितनी कम समझ है।

क्रूसारोहण यन्त्रणा देने और मृत्यु दण्ड का एक रूप था जिसे रोमियों ने तो आरम्भ नहीं किया परन्तु उनके द्वारा इसे ''पूरा किया गया'' था (यदि ऐसे घृणित कार्य को यह नाम देना हो)। आरम्भ में मारे गए शत्रुओं की लाशों को तीखे खूंटों या खम्भों पर जानवरों के खाने के लिए और विजय को दिखाने और पराजित हुओं के प्रति घृणा दिखाने के रूप में होता था। बाद में लोगों को जीवित शूली पर लटकाने का विचार आया। रोमियों ने इस भयानक ढंग को अपनाकर कील ठोकने या अपने शिकार को खम्भे या क्रूस से बांधकर, उसे तिल तिल कर मरने को छोड़ देने के लिए इसे धीरे धीरे मृत्यु देने में ''सुधार दिया'' (''पीड़ा'' के लिए अंग्रेज़ी शब्दों में सबसे विवरणात्मक शब्द ''excruciating'' मरम भेदक है जिसे लातीनी वाक्यांश *ex crucis* यानी ''क्रूस पर से'' लिया गया है।)

क्रूसारोहण के द्वारा मृत्यु आम तौर पर सदमे, संक्रमण, बाहर पड़े रहने, निढाल होने, या धम घुटने से होती थी। क्रूसारोहण से तुरन्त मृत्यु होने की कोई बात नहीं थी। यदि व्यक्ति को क्रूस से बांधा जाए तो कोई घाव नहीं होता था, सिवाय उनके जो पिटाई से होते थे जो कई बार (हर बार नहीं) क्रूस पर चढ़ाए जाने के पूर्व की जाती थी। हाथों को लकड़ी पर कील ठोकने पर भी यह प्रत्येक कलाई की हड्डियों के बीच ध्यान से कील लगाकर (वास्तव में पतली मेख) ठोका जाता था। इससे क्रूस पर टंगा होने पर व्यक्ति के शरीर के भार को सहारा देने के लिए हड्डी पर रोक लगाती थी (कील ठुकी हथेलियों पर इतना भार नहीं उठाया जा सकता होगा) और इससे लहू बहने से शीघ्र मृत्यु का कारण बनने वाली किसी बड़ी नस के फटने से भी बचा जा सकता था। क्रूस पर टंगे व्यक्ति को मरने के लिए छोड़ दिया जाता जिसमें कई बार कई कई दिन लग जाते थे।

परन्तु यीशु के मामले में तुलनात्मक रूप में मृत्यु जल्द हुई (सुसमाचार के विवरणों के अनुसार लगभग छह घण्टे में)। यह इस बात का सुझाव देता है कि यीशु की मृत्यु सम्भवतया हृदय घात या हृदय के फटने से हुई, जैसा यूहन्ना 19:34 में है, ''परन्तु जब यीशु के पास आकर देखा कि वह मर चुका है, तो उस की टांगें न तोड़ीं।'' कई डॉक्टरी विशेषज्ञ इस बात से सहमत हैं कि ''लहू और पानी'' सम्भवतया यीशु की मृत्यु के बाद लहू के सीरम और ठोस कणों के अलग होने सेक बने होंगे। उसकी मृत्यु निश्चित रूप से इस तथ्य से हुई कि क्रूस पर चढ़ाने से उसे कोड़े मारे जाने थे। कोड़े मारे जाना एक भयंकर प्रक्रिया थी। इसके लिए इस्तेमाल होने वाला कोड़ा हड्डी, धातू या शीशे के टुकड़े के साथ चमड़े के कई तसमों वाला होता था, जो हर प्रहार के साथ मांस को चीर डालता था। कुछ प्राचीन लेखकों ने टिप्पणी की है कि कठोर कोड़े मारे जाने के मामलों में, कई बार मार खाने वाले व्यक्ति के भीतरी अंक दिखाई देने लगते थे। कई बार कोड़े खाने से ही आदमी मर जाता था।

यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए जाने वाले दो अपराधियों के मामले में, मृत्यु धम घुटने से हो गई थी। लोगों को आम तौर पर उनकी टांगें घुटनों पर झुकाकर, पांवों को कील ठोकर या लकड़ी के ब्लॉक के साथ बांधकर क्रूस पर चढ़ाया जाता था। इससे व्यक्ति को डायाफ्राम में हवा लेने के लिए टांगों से भार डालने सहायता मिलती थी। हाथ ऊपर उठाए और पूरे शरीर का भार उठान से कई घण्टों की थकावट के बाद, सांस लेने का एकमात्र यही ढंग था, जो इतना पीड़ादायक था कि भार कील ठुके पांवों पर डालना पड़ता था। यूहन्ना 19:31-33 बताता है कि यहूदी अधिकारियों ने तीनों की शीघ्र मृत्यु के लिए उनकी टांगें तोड़ने के लिए पिलातुस से कहा, ताकि उनकी लाशों को उतारा जा सके और फसह वाले सब्त पर क्रूसों पर न रहें। टांगें तोड़ने का अर्थ था कि व्यक्ति टांगों को झुकाकर सांस नहीं ले सकता था और मृत्यु आम तौर पर कुछ ही मिनटों में हो जाती थी। यीशु की भी टांगे तोड़ी जाती परन्तु सिपाहियों ने देखा कि वह पहले ही मरा चुका है। उनमें से किसी ने यह सुनिश्चित करने के लिए उसकी पसली में भाला भेदा।

अपमान और शर्मिंदगी

क्रूस पर चढ़ाए जाने में न केवल शारीरिक पीड़ा थी बल्कि अपमान और शर्मिंदगी भी थी। रोमियों को मालूम था कि अपराधियों को मृत्यु दण्ड देने के कार्य से किस प्रकार पूरे प्रचार का लाभ उठाना है, इसलिए क्रूस पर चढ़ाया जाना लगभग ऐसी जगह पर होता था जो बहुत सार्वजनिक हो यानी उदाहरण के लिए वहां से लोग नगरों में आते जाते रहे हों। हमें यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के स्थान का सही-सही पता नहीं है, बेशक कई स्थानों का सुझाव दिया गया है।

व्यक्ति को जिस आरोप के लिए दण्ड दिया जा रहा हो उसे एक पट्टी पर लिख दिया जाता और उसे दोषी व्यक्ति के सिर पर लगा दिया जाता ताकि उधर से गुज़रने वाले हर किसी को पता चल जाए कि इसे यह दण्ड क्यों दिया गया और वह अपने आपको ऐसा करने से बचा ले। सुसमाचार के तीनों समानांतर वृत्तांतों में यीशु के सिर के ऊपर ''यहूदियों का राजा'' लिखे होने का उल्लेख है। यूहन्ना 19:19-22 इस बात को जोड़ देता है कि यह इब्रानी (सम्भवतया इब्रानी, फलस्तीन की आम भाषा), लातीनी (रोमी साम्राज्य के सरकारी भाषा) और यूनानी (भूमध्य के चारों और इस्तेमाल होने वाली सामान्य भाषा) में लिखा गया था। यह सिलालेख तीनों भाषाओं

में लिखा जाता था या नहीं, हम नहीं जानते। पिलातुस ने ये सुनिश्चित किया कि हर कोई इसे पढ़ सके। यूहन्ना ने यहूदियों की आपत्ति और पिलातुस से इसे ''उसने *कहा,* 'मैं यहूदियों का राजा हूं' '' लिखवाने का प्रयास किया। पितातुस ने उसे उस दण्ड की आज्ञा देने में विवश करने के लिए जिसके वह योग्य नहीं था अपने तुच्छ यहूदी प्रजा से मामुली सा बदला लेने के अवसर में देखा। उसने उन से केवल इतना कहा, ''मैं ने जो लिख दिया, वह लिख दिया'' (यूहन्ना 19:22)। बेशक सुसमाचार के लेखकों ने उस पट्टी को स्वभाविक रूप में यीशु के अंगीकार के रूप में देखा कि वह सचमुच ''यहूदियों का राजा'' क्रूसारोहण मरने का ऐसा अपमानजनक ढंग था कि यह केवल इसलिए यह बहुत निचले स्तर के नागरिकों के लिए सुरक्षित था और रोमी नगरिकों के लिए प्रयोग में नहीं लाया जाता था। (बेशक इतिहास में कुछ अपवाद हैं।) इससे पता चलता है कि पौलुस को जो एक रोमी नागरिक था, क्रूस पर चढ़ाए जाने के बजाय उसका सिर क्यों कलम किया गया था।[1] दूसरी ओर मात्र एक गलीली देहाती किसान होने के कारण पतरस को क्रूस पर चढ़ाया गया था (यूहन्ना 21:18, 19) में पतरस की मृत्यु के ढंग के रहस्य भेरे हवाले को देखें। क्रूस पर दिए जाने का अपमान हमें उस ठट्ठे को समझने में भी सहायता करता है जो क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले और उस दौरान यीशु को मिला। यह कैसे हो सकता है कि परमेश्वर के चुने हुए को ऐसी परिस्थिति में डाला जाए, विशेषकर उसे जो राजा होने का दावा करता हो? (मत्ती 27:27-44; मरकुस 15:16-32; लूका 23:32-38; फिलिप्पियों 2:8; इब्रानियों 12:2.)

क्रूस का अपमान, पौलुस के शब्दों में कहें तो आरम्भिक कुछ लोगों के लिए जिन्होंने यीशु की कहानी सुनी ''ठोकर का कारण''[2] था (1 कुरिन्थियों 1:23; गलातियों 5:11)। हम में से उन लोगों के लिए जो ''वाह वह प्यारी सलीब'' और ''मसीह के क्रूस में मैं महिमा पाता हूं'' गाते हैं यह अजीब लग सकता है, परन्तु यह पूरी तरह से समझ में आने वाला है। मूर्तिपूजक दृष्टिकोण से इसका कोई अर्थ नहीं है कि किसी के क्रूस पर दिए जाने से कुछ लाभ या किसी प्रकार की कोई भलाई ''जीती'' जा सके। यहूदी दृष्टिकोण से क्रूस यीशु के मसीहा होने की सम्भावना को नकार देता है। आखिर व्यवस्थाविवरण 21:23 में हर किसी पर जो वृक्ष पर लटकाया जाता है श्राप दिया गया है। (देखें यहोशू 8:29 जहां मृत्यु के बाद पेड पर लटकाए जाने को पूर्ण पराज्य और अपमान का संकेत माना गया।) परमेश्वर का मसीहा निश्चित रूप में श्रापित व्यक्ति नहीं हो सकता था! इससे क्रूस पर दिए, जी उठे मसीहा के प्रचार में आरम्भिक कलीसिया के लिए कुछ धर्मशास्त्रीय समस्या खड़ी हुई। पौलुस ने गलातियों 3:13, 14 में इस समस्या की बात की जहां वास्तव में उसने व्यवस्थाविवरण 21 वाले श्राप को उद्धृत किया। उसने समझाया कि ''मसीह ने जो हमारे लिए शापित बना, हमें मोल लेकर व्यवस्था के शाप से छुड़ाया [यानी, इसे पूरा करने की हमारी अयोग्यता; गलातियों 3:10-12],'' पौलुस ने यीशु की स्थिति के घिनौनेपन से इनकार नहीं किया, परन्तु उसने ज़ोर दिया कि यीशु क्रूस पर मरने के लिए आपने आपको देकर हमारा ''शाप'' अपने ऊपर ले रहा था।

ठोकर का महत्व

क्रूस की पौलुस की सबसे शानदार सफ़ाई 1 कुरिन्थियों 1:18-25 में है, जहां उसने माना

कि ''क्रूस की कथा नाश होने वालों के लिए मूर्खता है, परन्तु हम उद्धार पाने वालों के लिए परमेश्वर की सामर्थ है।'' उसने आगे कहा कि बेशक यहूदी लोग ''चिह्न'' मांगते हैं। (यानी यीशु की पहचान का पूरा प्रमाण) और यूनानी लोग ''बुद्धि'' की तलाश में हैं (सम्भवतया दर्शशास्त्रीय प्रबन्ध जिनका उनके लिए अर्थ होगा), परन्तु उसने स्वयं ''क्रूस पर चढ़ाए हुए मसीह'' का प्रचार जारी रखा। पौलुस कह रहा था कि हो सकता है कि अविश्वासियों को क्रूस पर विश्वास हो या न हो परन्तु परमेश्वर ने उसे जानने का एक और ढंग, क्रूस का ढंग दे दिया है। क्रूस आज भी बहुत से लोगों के लिए ठोकर का कारण है, बिल्कुल वैसे जैसे पहली सदी ईस्वी में था। सुसमाचार का संदेश किसी भी प्रकार से मनुष्य के तर्क या घमण्ड को आकर्षित नहीं करता क्योंकि हम पाप की वास्तविकता और इसे हटाने की आवश्यकता पर विचार को प्राथमिकता नहीं देते।

सारांश

यीशु की मृत्यु के ढंग के विषय में हम जो जानते हैं वह पूरी तरह से रोमियों द्वारा क्रूस पर चढ़ाए जाने और प्राचीन लोगों, यहूदी हों या अन्यजाति द्वारा इसकी धारणा पर हमारी जानकारी पूरी तरह से मेल खाती है। नये नियम का कोई लेखक क्रूसारोहण के रक्तरंजित विवरणों या क्रूस पर यीशु के संताप में नहीं गया। उसके मारे जाने का विवरण बिल्कुल आम शब्दों में हुआ है: ''तब उन्होंने उसको क्रूस पर चढ़ाया'' (मरकुस 15:24; मत्ती 27:35 भी देखें; लूका 23:33; यूहन्ना 19:18)। यह अधिकतर प्राचीन लेखकों के ढंग से मेल खाता है, जो स्पष्टतया यह सोचकर कि ऐसा करने से ठोकर लगेगी, क्रूस पर दिए जाने की विवरणों की बात नहीं करते थे। सुसमाचार के आरम्भिक पाठकों को अच्छी तरह मालूम था कि क्रूस पर चढ़ाया जाना कैसा होता है, क्योंकि दण्ड आम लोगों के सामने दिया जाता था। उनके लिए ''क्रूस'' शब्द का उल्लेख आराधना वाले घर या आभूषणों का नक्शा ध्यान में नहीं लाता था बल्कि यह साफ़ और सरल शब्दों में मृत्यु का ढंग था। उनके लिए यह बात अधिक महत्व रखती थी कि मरा कौन और क्यों मरा।

टिप्पणियां

[1]यूसबियस *चर्च हिस्टरी* 2.25.5. [2]अलंकार का यह शब्द यूनानी भाषा के *skandalon* जिसका अर्थ मूल में फंदा था, फिर इसका अर्थ ठोकर का कारण हो गया। अंग्रेज़ी शब्द ''सकैंडल,'' इसी शब्द से लिया गया है और ''द सकैंडल आफ़ द क्रॉस'' 1 कुरिन्थियों 1:23 और गलातियों 5:11 में पौलुस की टिप्पणियों पर आधारित है।